THE CORE IAS

The Core IAS

India's First Institute Dedicated to Answer Writing

(A Unit of Just Unlearn)

GENERAL STUDIES MAINS TEST PAPER

ANDIDATES NAME- SWATI JAIN

EGISTRATION CODE-

MEDIUM- HinDI

DATE- 18/10/2022

INDEX TABLE

S.N.	MAXIMUM MARKS	MARKS OBTAINED
1.		
2.		
3.		
4.		
5.		
6.		
7.		
8.		
9.		
10.		
11.		
12.		
13.		
14.		
15.		
16.		
17.		
18.		
19.		
20.		

INSTRUCTIONS

OFFICE- THE CORE IAS ,III CHAMBER, II FLOOR, BATRA CINEMA COMPLEX ,
DR. MUKHERJEE NAGAR DELHI -110009 +91-8800141518 WWW.THE COREIAS.COM

Q1. Explain briefly what you understand by: (i) Virtue Ethics. (ii) Consequentialist Ethics. (iii) Principled Ethics. Which one makes the most sense to you and why? Give examples. (10 Marks, 150 Words)

संक्षेप में बताएं कि आप इससे क्या समझते हैं: (i) सदाचार नीति। (ii) परिणामवादी नैतिकता। (iii) सैद्धांतिक नैतिकता। कौन सा आपको सबसे ज्यादा व्यवहार्य बनाता है और क्यों? उदाहरण दो। (10 अंक, 150 शब्द)

सदाचार नीति → नीतिशास्त्र की वह शाखा जिसमें व्यक्ति के चरित्र, आचरण का मूल्यांकन उसके उत्कृष्ट मूल्यों गुणों, आदर्शों के आधार पर करते हैं। जैसे - यदि एक ईमानदार व्यक्ति से कभी थोड़ी भूल हो भी जाए तो सदाचार नीति के अनुसार उसे गलत नहीं ठहराया जाता है

अरस्तू ने कहा था "आपकी मूल्य आपके चरित्र को दर्शाते हैं तथा चरित्र आपकी इज्जत को।

परिणामवादी नैतिकता → नीतिशास्त्र की वह शाखा जिसमें व्यक्ति का मूल्यांकन उसके द्वारा किये कार्य के परिणाम के आधार पर किया जाता है। यहाँ 'साध्य' की पवित्रता पर जोर दिया जाता है

उदा० - एक चोर व्यक्ति ने चोरी की और उसके पैसों से गरीबों को भोजन कराया। परिणामवादी नैतिकता की दृष्टि से किसी भूखे को भोजन देने के आधार पर यह नैतिक होगा।

इसी प्रकार महाभारत के युद्ध अर्जुन को असंख्य मृत्यु के परिणाम के कारण अनैतिक लग रहा था।

सैद्धांतिक नैतिकता → यह नीतिशास्त्र की शाखा है जिसमें नैतिक 'सिद्धांतों के समुच्चय' होते हैं जिसके आधार पर व्यक्ति के चरित्र व आचरण का मूल्यांकन करते हैं। जैसे - गांधीवादी सिद्धांत के अनुसार किसी कृत्य के मूल्यांकन हेतु 'साधन व साध्य' दोनों की पवित्रता आवश्यक है।

कौन ज्यादा व्यवहार्य -

मानव जीवन में नैतिकता को उच्चतम स्तर पर अनुकरण हेतु सदाचार नीति ज्यादा व्यवहार्य है। क्योंकि इसमें पूरी कृत्य प्रक्रिया के दौरान नैतिक मूल्यों का पालन करना होता है।

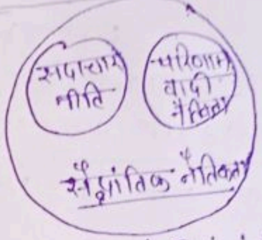

तीनों में संबंध

जबकि सैद्धांतिक नैतिकता में सदाचार नीति के अलावा अन्य सिद्धांतों का भी प्रभुत्व हो सकता है - जैसे - हाब्स का स्वार्थवाद के आधार पर देखें तो लालच मनुष्य की मूल प्रवृत्ति के आधार पर नैतिक होगी। लेकिन यह वास्तविक जीवन में समस्याएं पैदा करती है।

Q2. Lack of organ donation results in half a million deaths annually in India due to unavailability of organs. How social persuasion and attitudinal changes can help reduce such deaths. (10 Marks, 150 Words)

अंगदान की कमी के कारण भारत में हर साल अंगों की अनुपलब्धता के कारण पांच लाख लोगों की मौत होती है। सामाजिक अनुनय और व्यवहार परिवर्तन ऐसी मौतों को कम करने में कैसे मदद कर सकते हैं। (10 अंक, 150 शब्द)

कहा जाता है,
" जीते जी यदि किसी के काम नहीं आ सकते तो मरने पर तो आ जाओ।"

यदि व्यथित भारत में प्रतिवर्ष अंगों की अनुपलब्धता के कारण 5 लाख से ज्यादा मौतें होती हैं।

ऐसे में आवश्यक है कि लोगों को अंगदान के बारे में प्रोत्साहित कर मानॅव अंग रवत 1994 के तहत उनका दान वैध रूप से निश्चित कराया जाए।

सामाजिक अनुनय और व्यवहार परिवर्तन मौतों को कैसे कम करेंगे। →

(1) अंगदान सुनिश्चित करके

(1) अनुनय द्वारा लोगों को उपलब्ध बताते हुए भावनात्मक बुद्धि द्वारा अंगदान हेतु प्रोत्साहित किया जा सकता है।

(2) लोगों को जागरूक करके किसी दूसरे का जीवन बचाने हेतु राजी किया जा सकता है।

(3) अंगदान के संबंध में लोगों की निष्क्रियता

के संबंध में उनका 'स्टीइयड पैज' करके उन्हें सक्रिय बनाया जा सकता है।

(II) अंग को जरूरत मंद तक पहुँचाकर →

प्रायः देखा जाता है कि अस्पतालों में अंग उपलब्ध होने के बाद भी वह समय से जरूरत मंद तक नहीं पहुंच पाता ऐसे में

(1) ट्रैफिक के दौरान अनुनय द्वारा भीड़ को हटाकर।

(2) व्यवहार परिवर्तन द्वारा सामान्य जन SHG / NGO के साथ मिलकर बाधारहित अंग ट्रांसपोर्टेशन में मदद कर सकते।

इस प्रकार अनुनय तथा व्यवहार परिवर्तन किसी भी कार्य की सफलता के लिए 2 अनिवार्य साधन हैं। जो ऐसी परिस्थिती में मौतों को कम कर सकते हैं।

Mains Test P
2022-Ist
उम्मीदवारों को इस हाशिए में लिखना चाहिए
candidaates must not write on this margin
India's First Institute dedicated to Answer writing

Q3. (a) Can an individual be ethical in his/her professional conduct, while not being ethical in his/her personal life? Discuss giving suitable examples. (10 Marks, 150 Words)

क्या और व्यक्ति अपने पेशेवर आचरण में नैतिक हो सकते हैं, जबकि अपने निजी जीवन में नैतिक नहीं हो सकते हैं? उपयुक्त उदाहरण देते हुए चर्चा कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

(b) ' In ethics you are one of the subjects of your own inquire'. Do you agree? Justify giving examples from your own life. (10 Marks, 150 Words)

'नैतिकता में आप अपनी खुद की पूछताछ के विषयों में से एक हैं'। क्या आप सहमत हैं? अपने स्वयं के जीवन से उदाहरण देते हुए औचित्य सिद्ध कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

(a) पेशेवर आचरण से तात्पर्य व्यक्ति के कामकाजी जीवन में नैतिक होने से है। तथा निजी जीवन में नैतिक होना अर्थात् पारिवारिक संबंधों व दायित्वों को निभाते हुए वात्सल्य, प्रेम, सहिष्णुता, समता आदि मूल्यों को धारण करना है।

व्यक्ति पेशेवर नैतिक तथा निजी जीवन में अनैतिक हो सकता है —

लेकिन यह केवल वही व्यक्ति में हो सकता है जिसमें नैतिकता अभी शेष है। कुछ परिस्थितियाँ ऐसी हो सकती हैं जिसमें व्यक्ति पारिवारिक जीवन में नैतिकता नहीं निभा पा रहा हो जैसे - पारिवारिक कलह, तलाक आदि के कारण। यदि व्यक्ति में भावनात्मक बुद्धि है तो वह उसका प्रयोग कर व्यवसाय में नैतिक मूल्यों को बनाये रखेगा।

उदा० - बिल गेट्स का तलाक होना कहीं न कहीं उनके निजी जीवन में अनैतिक स्थिति को दर्शाता है किंतु वे एक प्रतिष्ठित नैतिक व्यवसायी हैं।

किंतु सामान्यतः ऐसा देखा जाता है कि जो व्यक्ति अपने निजीजीवन में अनैतिक हो वह पेशेवर रूप से भी जनहित नहीं करेगा। क्योंकि व्यक्ति के निजी तथा पेशेवर जीवन आपस में बंधे हुए हैं एक का बिगड़ना दूसरे पर असर डालता है।

उदा० - यदि व्यक्ति की घर में लड़ाई हो तो वह अपना फ्रस्ट्रेशन ऑफिस में निकालेगा।

अरस्तू के अनुसार -
" क्रोध सभी को आता है वक्त उसे कितना कहाँ कैसा करना है वह समझदारी का गुण है"

अतः व्यक्ति को अपने दोनों जीवन में साम्य बनाकर नैतिक संतुलन करना चाहिए।

(b) नैतिकता मनुष्य को उच्चतम मूल्यों व आदर्शों की ओर ले जाती है।

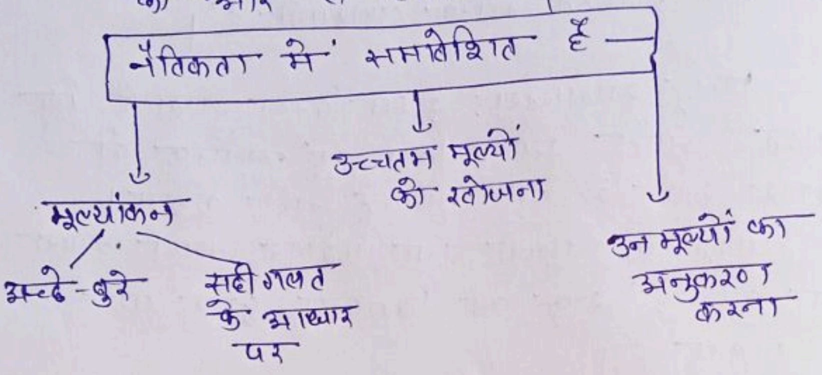

नैतिकता में मनुष्य स्वयं से पूछताछ कब करता है →

(1) जब स्पष्ट कानून का अभाव हो और व्यक्ति विवेक के आधार पर निर्णय ले।

(2) जब व्यक्ति नैतिक दुविधा में हो।

(3) जब व्यक्ति में किसी कार्य को लेकर अंतरात्मा का द्वंद हो।

इन स्थितियों से निपटने हेतु गाँधी जी ने भी कहा था –

" जब बाहर से मार्गदर्शन नहीं मिले तो व्यक्ति को अपने अंदर झाँकना चाहिए व अंतरात्मा की आवाज सुननी चाहिए यही ईश्वर की आवाज है।"

स्व मूल्यांकन कैसे करता है →।

① खुद को अन्य के परिप्रेक्ष्य में रखकर। जैसे - यदि मेरी जगह गांधी जी होते तो क्या करते।

② उच्चतम मूल्यों जैसे - ईमानदारी, साहस, प्रेम, दया आदि को सर्वत्र प्राथमिकता देकर।

③ नैतिक सिद्धांतो के आधार पर जैसे - धर्म - पाप - पुण्य सिद्धांत।

मैं जब समस्या या द्वंद में फंस जाती हूँ तो मैं अपनी माँ का परिप्रेक्ष्य धारण कर सोचती कि वो यहाँ होती तो क्या करती? जैसे - एक बार कॉलेज से लौटने पर रास्ते में एक कुत्ता जख्मी पड़ा था और मेरी क्लास का समय हो रहा था तब मैंने माँ की बात याद की कि "कैसी भी समस्या हो दूसरों की सहायता को अवश्य तत्पर रहो।" तथा उस कुत्ते को पास के पशु चिकित्सालय पहुंचाने को प्राथमिकता दी।

Mains Test Paper 2022-Ist
उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
candidaates must not write on this margin

THE CORE IAS
India's First Institute dedicated to Answer writing
8800141518

Q4. Given are two quotations of moral thinkers/philosophers. For each of these bring out what it means to you in the present context.

नैतिक विचारकों/दार्शनिकों के दो उद्धरण दिए गए हैं। इनमें से प्रत्येक के लिए वर्तमान संदर्भ में आपके लिए इसका क्या अर्थ है, यह बताएं।

(a) "When we are caught up in a destructive emotion, we lose one of our greatest assets: Our independence." (10 Marks, 150 Words)

"जब हम एक विनाशकारी भावना में फंस जाते हैं, तो हम अपनी सबसे बड़ी संपत्ति खो देते हैं: हमारी स्वतंत्रता।" (10 अंक, 150 शब्द)

(b) "Happiness is when what you think, what you say, and what you do are in harmony". (10 Marks, 150 Words)

"खुशी तब होती है जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं उसमें सामंजस्य हो।" (10 अंक, 150 शब्द)

(a) उपर्युक्त कथन के एक पक्ष को देखें तो गाँधी जी ने कहा था " लालच मनुष्य की आत्मा में जहर घोल देती है।"

कथन से आशय है कि यदि व्यक्ति कोई बुरी भावना जैसे - घृणा, नफरत, लालच, नशे की लत आदि में फंसता है तो व्यक्ति का खुद पर से नियंत्रण हट जाता है अब व्यक्ति उन्हीं नकारात्मक भावनाओं के प्रभाव से कार्य करता है।

उदा० - किसी से ईर्ष्या करने पर व्यक्ति का केवल वही कार्य करना जो सामने वाले से आगे निकलने की चाहत में हो।

अन्य अभिप्राय →

(1) वर्तमान में युवाओं को नशे की लत चाहे वह ड्रग्स हो या पॉर्न वीडियो उनको मानसिक विक्षिप्त कर देती है।

(2) शत्रुता की भावना व्यक्ति के हृदय की स्वतंत्रता का हनन कर दूसरों के बारे में केवल बुरा सोचने पर मजबूर करती है।

(3) पारिवारिक संबंधों में घृणा की भावना संबंधों में दरार डालती है इससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन जैसे मारपीट, धार्मिक हिंसा के आधार पर भी होता है।

दुष्परिणाम →

(1) व्यक्ति स्वहित, समाज हित छोड़कर दूसरों के बारे में सोचता रहेगा।

(2) गाँधी जी ने कहा था - "अंधा करने का बदला अंधा पूरे युग को अंधा बना देती है" बिगाड़ो

(3) सामाजिक प्रगति, आर्थिक प्रगति में बाधा।

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था - "हृदय मनुष्य का बहुत अच्छा उर्वरक है इसमें जो कुछ रोपते हैं निश्चित ही फलता है तय मनुष्य को करना है कि इसमें से क्या काटना चाहिए।"

अतः इस आधार पर मनुष्य को विनाशकारी भावनाओं का त्याग कर प्रगतिशील नजरिया अपनाना चाहिए।

(b) उपर्युक्त कथन गांधी जी का है जिसमें वह व्यक्ति के जीवन में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, कर्त्तव्य भावना पर जोर दे रहे हैं।

कथन से आशय है जब व्यक्ति की कथनी और करनी में एकता होगी तभी व्यक्ति को प्रसन्नता होगी।

वर्तमान संदर्भ में आशय -

(1) यदि व्यक्ति जो कहता है वही करता है तो व्यक्ति को मानसिक शांति मिलती है।
वर्तमान में भारत में कुल रोगियों में 18.5% मानसिक रोगी हैं यदि सभी व्यक्ति यही सिद्धांत मानने लगे तो उनकी मानसिक दुविधा समाप्त हो सकती है जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

(2) प्रशासन में व्यक्ति द्वारा सत्यनिष्ठा का पालन करने से उसके समक्ष हित विरोधिता के मुद्दों की संभावना कम होगी। जिससे तंत्र में दक्षता व प्रभावशीलता आएगी।

(3) यदि समाज में बुद्धिजीवी वर्ग अपने विचारों को फलीभूत करेंगे तो समाज से रूढ़िगत सोच्य जैसे महिलाओं

के प्रति पितृसत्तात्मक, LGBTQ को अस्वीकारता आदि समाप्त किये जा सकते हैं।
उदा० - राजा राम मोहन राय के प्रयासों से सतीप्रथा समाप्त।

लेकिन ऐसे में यह आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी नैतिक सोच को ही कार्यगत करे। यदि उसकी सोच अनैतिक है और वो वही करता है तो यह विडंबना की स्थिति हो जायेगी।

उदा० - चीन द्वारा अपने प्रभुत्व को स्थापित करने की अनैतिक सोच बार बार LAC पर हमला कर रही है जिससे भारत व चीन में आक्रोश का माहौल है।

अतः यदि नैतिक सोच को व्यवहारगत करें तो व्यक्ति अंततः सफलता व सामाजिक परिवर्तन को प्राप्त करा सकता है।

Mains Test Paper 2022-1st
उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए candidaates must not write on this margin

8800141518 The Core IAS
India's First Institute dedicated to Answer writing

Q5. (a) What is meant by 'International ethics? Why is it important to study? Discuss any one international issue from the viewpoint of international ethics. (10 Marks, 150 Words)

'अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता' से क्या तात्पर्य है? इसका अध्ययन करना क्यों जरूरी है? अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता की दृष्टि से किसी एक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे की विवेचना कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

(b) What are the key elements of emotional intelligence? Which three eiements do you think are most important for effective governance and administrative capabilities of a civil servant? Give reasons (10 Marks, 150 Words)

भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रमुख तत्व क्या हैं? एक सिविल सेवक के प्रभावी शासन और प्रशासनिक क्षमताओं के लिए आपके विचार में कौन से तीन तत्व सबसे महत्वपूर्ण हैं? कारण बताएं (10 अंक, 150 शब्द)

(a) अंतर्राष्ट्रीय संबंधों (जैसे – संधि, समझौते आदि) को निभाते समय उच्चतम नैतिक मूल्यों व आदर्शों (जैसे – मानवता, समता) आदि का का पालन करना ही अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता है।

अध्ययन क्यों जरूरी →

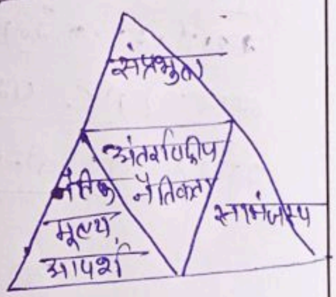

(1) अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता किसी संप्रभु शक्ति को अपनी हद का उल्लंघन करने से रोकता है।

(2) वर्तमान में परमाणु शक्ति, तकनीकी शक्ति (मिसाइल, रॉकेट) आदि के दौर में सामंजस्य स्थापित करने हेतु जरूरी।

(3) ~~मानव~~ विभिन्न देशों के मनुष्यों की मानवाधिकारों की सुरक्षा हेतु।

(4) कोई भी निर्णय लेते समय पिछड़े देशों का हित सोचने हेतु।
जैसे - WTO विकासशील देशों को सब्सिडी राहत देता है।

नैतिक मुद्दे →
- शरणार्थियों का मुद्दा
- जैविक हथियार का मुद्दा
- कूटों का खतरा
- तकनीकी इस्तेमाल (ड्रोन) के अनैतिक उपयोग का मुद्दा
- पर्यावरण का मुद्दा

शरणार्थी मुद्दा →

उत्पत्ति के कारण
- देशों में तख्तापलट (अफगानिस्तान, म्यांमार)
- दूसरे देश के लोगों को नहीं स्वीकारना।
- देश में युद्ध आंतरिक अशांति (यूक्रेन, इज़राइल)

समस्याएँ
- शरणार्थियों के मानवाधिकार की (U.N.)
- उनके मूलाधिकार की (देशों के संविधानों)
- उनके जीवन की गुणवत्ता की (स्वास्थ्य, आवास, रोजगार)
- बच्चों के शिक्षा की
- उनके सम्मान की

अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता को निभाने के उपाये —
- सभी पाठ्यक्रमों में मूल्य समावेशन (मानवता, वात्सल्य, प्रेम, करुणा)
- स्टोइक का विश्वनागरिकतावाद सिद्धांत अपनाना
- विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय समूहों को नैतिक मुद्दों पर आगे आना
- अंतर्राष्ट्रीय नैतिक संहिता बनाना
  - 2nd ARC सुझाव

(b) डेनियल गोलमैन की पुस्तक इमोशनल इंटेलिजेंस के अनुसार व्यक्ति, का स्वयं की व दूसरों की भावनाओं को समझना, नियंत्रित करना तथा सामाजिक संबंधों में उसका इस्तेमाल करना भावानात्मक बुद्धि है

इसके प्रमुख घटक (तत्व) →

(1) आत्म जागरूकता – अपने संवेगों को जानना।

(2) आत्म नियमन – संवेगों को नियंत्रित करना।

(3) अभिप्रेरण – लक्ष्य प्राप्ति के प्रति अभिप्रेरित रहना।

(4) सहानुभूति – परिप्रेक्ष्य ग्रहण द्वारा दूसरो के संवेगों को जानना ।

(5) सामाजिक कौशल – सामाजिक संबंधों में सभी तत्वों का इस्तेमाल ।

सिविल सेवक के लिए आवश्यक तत्व →

(1) आत्म नियमन –

(i) यह सिविल सेवक को उसके संवेगों को नियंत्रित कर उसे सहिष्णु, धैर्यवान बनाएगा ।

(ii) इससे समालोचनात्मकपूर्ण किसी कार्य का

विश्लेषण होगा जिससे तंत्र की दक्षता व प्रभाविता बढ़ेगी।

└→ आपात स्थितियों में त्वरित निर्णय लेने में समर्थ होगा।

(2) सहानुभूति →

(i) इससे जनता की समस्याओं व संवेगों को समझ सकता है जिससे

└ जनहित में नीति निर्माण।

└ समस्याओं का शीघ्र निराकरण।

└ जनता व प्रशासन में सहयोग भावना होगी।

(3) सामाजिक कौशल →

(i) इससे नीति निर्माण प्रभावी होगा।

(ii) जनता अपने अधिकारों व लाभों (प्राप्त) के बारे में अधिकारी द्वारा जागरूक की जायेगी।

उदा० IAS सौरभ कुमार द्वारा नक्सल इलाकों की जनता को जागरूक करना

(iii) प्रशासन की दक्षता में वृद्धि होगी।

अतः EI सभी प्रकार उचित, अधिकारी की निजी, सामाजिक, पेशेवर जीवन में सहायता करती है।

The Core IAS
India's First Institute dedicated to Answer writing
8800141518
Demand
Structure
Content
Enrichment
Feedback
Mains Test Paper 2022-Ist
उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
candidaates must not write on this margin

8800141518
The Core IAS
India's First Institute dedicated to Answer writing

Q6. (a) 'To take a life when a life has been lost is revenge, it is not justice. Comment. Should India do away with capital punishment and instead focus upon other innovative methods? Analyse. (10 Marks, 150 Words)

'जब एक जीवन खो गया है तो एक जीवन लेना बदला है, यह न्याय नहीं है। टिप्पणी कीजिए। क्या भारत को मृत्युदंड को समाप्त कर देना चाहिए और इसके बजाय अन्य नवीन तरीकों पर ध्यान देना चाहिए? विश्लेषण कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

(b) Life in modern day India, and increasingly elsewhere throughout the world, offers no assurances regarding what is the morality correct thing to do. In such situations how an individual should base his/her conduct or actions? Illustrate giving real-life examples. (10 Marks, 150 Words)

आधुनिक भारत में जीवन, और दुनिया भर में तेजी से कहीं और, नैतिक रूप से सही काम क्या है, इस बारे में कोई आश्वासन नहीं देता है। ऐसी स्थितियों में किसी व्यक्ति को अपने आचरण या कार्यों को कैसे आधार बनाना चाहिए? वास्तविक जीवन के उदाहरण देते हुए उदाहरण दीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

(a) उपर्युक्त कथन की तरह गाँधी ने भी कहा है "आँख के बदले आँख पूरे युग को अंधा कर देता है"

उपर्युक्त कथन के नैतिकता का परीक्षण

नैतिक है न्याय है	अनैतिक है अन्याय है
• कर्तव्यवादी नीतिशास्त्र जहाँ साधन पर बल देती है। गीता में कृष्ण ने द्रोपदी का वस्त्र हरण के बदले महाभारत युद्ध नैतिक बताया।	• परिणामवादी दृष्टिकोण के अनुसार अंततः मारना अनैतिक होगा।
• चाणक्य - "कठोर अपराध की सजा भी क्रूरतम होनी चाहिए।"	• गाँधीवादी के अनुसार "साधन व साध्य दोनों की पवित्रता आवश्यक" अतः यह अनैतिक होगा।

उपर्युक्त विश्लेषण को देखें तो विचारकों के विभिन्न मत है इसके नैतिकता को लेकर

मृत्युदंड की आवश्यकता क्यों ? →

(1) आजकल अपराधियों की क्रूरता बढ़ती जा रही है ऐसे में प्रशासनिक कठोरता दिखाकर अन्याय में कमी हेतु ।

उदा० – निर्भया case

(2) दंड के डर से स्वतः नैतिकता का पालन कराने हेतु

(3) पीड़ित को तुलनात्मक न्याय दिलाने हेतु ।

समाधान →

(1) मृत्युदंड को समाप्त नहीं करना चाहिए →, इसके स्थान पर उन परिस्थितियों को नियंत्रित करना चाहिए जिनके आधार पर मृत्युदंड हो ।

(2) मृत्युदंड प्राप्त दोषी को भी कारागार में उसके नैतिक आचरणों को देखते छूट का प्रावधान होना चाहिए ।

नवीन तरीके →

(1) दंड के → मृत्युदंड के अलावा अन्य गंभीर शारीरिक क्षति करना जिससे दोषी का जीवन तो बचा रहे ।

(2) समाज में नैतिकता का प्रसार – (i) मूल्य समावेशन द्वारा

(ii) sex education, लैंगिक संवेदनशीलता हेतु अभिवृत्ति परिवर्तन करके महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोका जा सकता है ।

(b) " जीवन में ऐसे क्षण भी आते हैं जब व्यक्ति को बाहर से मार्गदर्शन न मिले ऐसे में अपने भीतर झाँकिए व निर्णय लें यही अंतरात्मा की आवाज है।"

— गाँधी जी

~~अतः~~ - व्यक्ति को कानून के अनुसार हमेशा चलना चाहिए क्योंकि वही नैतिकता का आधार होता है लेकिन कानून की स्पष्टता के अभाव में ~~या~~ बाहरी मार्गनिर्देशन के अभाव में व्यक्ति अपने मूल्यांकन का निम्न आधार बना सकता है। →

① उच्चतम मूल्यों, आदर्शों को प्राथमिकता देना -

जैसे - सामाजिक संबंधों में अपना स्वार्थ व परहित देखने पर परहित को सर्वोपरि रखना।

② सफल व नैतिक व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य ग्रहण द्वारा -

जैसे - यदि मेरे जगह गांधीजी होते तो वह ये कार्य करते या नहीं करते ?

③ अंतरात्मा की आवाज सुनना -

आपका मन की नैतिकता किसी विषय के बारे में बता देती है कि वह कार्य सही है या गलत ?

उदा० - आफिस में ऐसा कार्य आपको सौंपा जाए जिसमें कहीं न कहीं यदि

The Core IAS
India's First Institute dedicated to Answer writing
8800141518

आपका हित है तो अंतरात्मा ऐसे कार्य अहितकर से खुद को रोकने के संकेत देगी।

(4) नैतिक सिद्धांतों का पालन करने से - जैसे - बचपन से ही हम पाप - पुण्य की अवधारणा के आधार पर नैतिकता का निर्धारण करते आ रहे हैं (कर्मफल सिद्धांत)

- इस प्रकार व्यक्ति को समस्त पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर, गहन चिंतन मनन के द्वारा आत्मनिर्देशित होना चाहिए।

Demand

Structure

Content

Enrichment

Feedback

Q7. There is a gradual revival in the number of clinical trials being done in India. What are the major ethical issues involved in it? Can compensation Justify it? Discuss. (10 Marks, 150 Words)

भारत में किए जा रहे नैदानिक परीक्षणों की संख्या में धीरे-धीरे पुनरुद्धार हो रहा है। इसमें शामिल प्रमुख नैतिक मुद्दे क्या हैं? क्या मुआवजा इसे सही ठहरा सकता है? विचार-विमर्श कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

गाँधी के अनुसार - "मुझे तकनीक से समस्या नहीं है समस्या है उसके प्रति सनक से जिसका परिणाम मानव जाति को भुगतना पड़ सकता है।"

नैदानिक परीक्षण —)

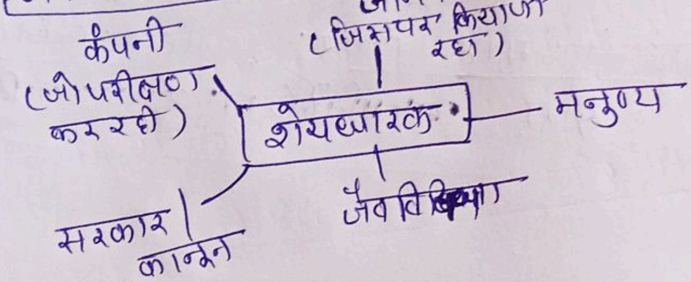

नैतिक मुद्दे —

① परीक्षण कंपनी की मोनोपॉली का मुद्दा — किस पेटेंट अधिकार के आधार पर कंपनी किस तरह परीक्षण कर रही आदि जानकारी की गोपनीयता

② अधिकतम लाभ बनाम नैतिकता :—

③ मानव हितों का मुद्दा —
- चीन में कोरोना टेस्टिंग से मानवीय जाति संकटग्रस्त हो गई।

(4) पर्यावरण का मुद्दा –

लैब का अपशिष्ट सामग्री खुले में फेंकने से जल, वायु प्रदूषण की समस्या।

(5) जैव विविधता का मुद्दा –

निकलने वाले रसायनों से जीव जंतु को समस्या

(6) जंतु अधिकार का मुद्दा –

जिस जंतु (जैसे – चूहा) पर परीक्षण किया जा रहा उसकी स्वतंत्रता का मुद्दा

मुआवजा देना –

सही है	गलत है
(1) उपयोगितावादी दृष्टिकोण से यदि थोड़ी हानि पर वह परीक्षण सफल हो जाए तो सही है मुआवजा	(1) मानवीय मूल्य व खून की तुलना नहीं की जा सकती।
(2) यह तुलनात्मक न्याय को समर्थित करता है उदा० हानि के बदले पैसा	(2) मानव व जंतु अधिकार सर्वोपरि है किसी के जीवन खोने पर उसका परिवार उसे पैसों से प्राप्त नहीं कर सकता।
(3) कभी कभी थोड़ी क्षति पर मुआवजा राशि से उसे पूर्ति की जा सकती है उदा० – टेस्टिंग के कारण यदि वहाँ से विस्थापन करना पड़े तो मुआवजा उपयोगी होगा	(3) यदि परीक्षण असफल हुआ या उसका दुरुपयोग हुआ तो संसार पर संकट आ जायेगा जैसे – कोरोना spread ऐसे में मुआवजा कुछ नहीं कर सकता।

www.thecoreias.com 15 thecore.org.in@gmail.com

अतः सरकार को आवश्यक नियंत्रण लगाकर परीक्षण के दुरुपयोग व दुष्प्रभाव की संभावना कम करनी चाहिए।

Mains Test Paper 2022-Ist
उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
candidaates must not write on this margin

Q8. What according to you are the major reasons for rising incidents of mob lynching in India? Suggest measures to re-strengthen tolerance and compassion in society, especially towards the weaker sections in this context. (10 Marks, 150 Words)

आपके अनुसार भारत में मॉब लिंचिंग की बढ़ती घटनाओं के प्रमुख कारण क्या हैं? इस संदर्भ में समाज में विशेष रूप से कमजोर वर्गों के प्रति सहिष्णुता और करुणा को फिर से मजबूत करने के उपाय सुझाएं। (10 अंक, 150 शब्द)

वर्तमान में दिल्ली दंगों आदि के आधार पर देखें तो भीड़ के द्वारा हिंसा करने का स्तर बढ़ रहा है जो बेहद अनैतिक व गैर कानूनी कृत्य है।

मॉब लिंचिंग के कारण →

① व्यक्तिगत कारण – (i) व्यक्ति में नकारात्मक मूल्यों का वर्चस्व (नफरत, घृणा आदि)

(ii) उसमें धर्म संबंधी सहिष्णुता तथा स्वीकार्यता की कमी।

② सामाजिक कारण – (i) समाज की रूढ़िगत सोच – दलितों, महिलाओं के प्रति।

(ii) सामाजिक सौहार्द की भावना की कमी।

③ आर्थिक कारण – व्यक्ति के साथ हो रहा अन्याय बहुत कुछ उसकी आर्थिक स्थिति के पिछड़ेपन पर भी निर्भर करता है।

उपाय – कहीं भी मॉब लिंचिंग में समाज के अमीर वर्ग की हिंसा नहीं सुनते।

ऐसे में आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्वाग्रह छोड़कर कमजोर वर्गों के प्रति सहिष्णुता व करुणा को जगाये।

Mains Test Paper 2022-Ist
उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
candidaates must not write on this margin

उपाय –

① "मूल्य समावेशन द्वारा" – अरस्तू के अनुसार मूल्यों को अर्जित किया जा सकता है। ऐसे में व्यक्ति में प्रेम, वात्सल्य, दया आदि मूल्यों का अर्जन।

② सामाजीकरण द्वारा – समाज में कुरीतियों को छोड़कर सभी धर्मों, जातियों के प्रति सम्मान, सहिष्णुता विकसित करना।

③ क्लासिकल कंडेशनिंग द्वारा – समाज के बुद्धिजीवी वर्ग - SHG / NGO, सरकार द्वारा लगातार सकारात्मकता बनाये रखने का प्रयास करना।

④ इंस्ट्रूमेंटल कंडेशनिंग – कानून की कठोरता करना तथा भीड़ हिंसा पर कठोर कार्यवाही करके।

⑤ अभिवृत्ति परिवर्तन द्वारा – कट्टरपंथियों के मन से ब्राह्मण - दलित, महिला - पुरुष की भावनाओं को निकालकर करुणा, समता की भावना भरना।

इस प्रकार समाज द्वारा प्रगतिशील नजरिया अपनाया जाना चाहिए।

Q9. "You can't teach good judgment through general rules, because you already need judgment to know how rules apply." (10 Marks, 150 Words)

"आप सामान्य नियमों के माध्यम से अच्छा निर्णय नहीं सिखा सकते, क्योंकि आपको यह जानने के लिए पहले से ही निर्णय की आवश्यकता है कि नियम कैसे लागू होते हैं।" (10 अंक, 150 शब्द)

(a) What do you understand by 'good judgment'?

'अच्छे निर्णय' से आप क्या समझते हैं ?

(b) How can it be ensured among civil servants, if not through rules?

सिविल सेवकों के बीच यह कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है, यदि नियमों के माध्यम से नहीं?

सामान्य नियम कोई भी संस्था, समाज बना सकती है उन नियमों के लिए कोई ठोस तर्क या आधार की आवश्यकता नहीं होती है इसी कारण सामान्य नियमों के संदर्भ में कुछ प्रश्न हमेशा रहते हैं जैसे - ये नियमों का आधार क्या है ? इन्हें लागू कैसे करें ?

[उदा०] -

[1] अच्छा निर्णय - अच्छे निर्णय से तात्पर्य है ऐसा निर्णय जो मूल्यों, आदर्शों से युक्त हो तथा सर्वोत्तम सुरवाय, की सुरक्षा व सर्वहित अवधारणा पर आधारित होकर सर्वहित सुनिश्चित करे।

[उदा०] - S.C. का हुसैनारा खातून निर्णय अच्छा निर्णय है क्योंकि उसमें उपेक्षित कैदी वर्ग की स्वतंत्रता को सर्वोपरि रखा गया।

[अच्छे निर्णय की विशेषताएँ] ⟶

- पूर्वाग्रहों से मुक्त
- निष्पक्ष
- वस्तुनिष्ठता आधार
- नैतिकता का समावेशन
- समावेशी हित पर केंद्रित

b | सिविल सेवकों में निम्न प्रकार से सुनिश्चित किया जा सकता →

(1) मूल्यों के समावेशन द्वारा – वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता आदि इमानदारी, मूल्यों को धारण करके।

(2) ट्रेनिंग द्वारा – उन्हें जीवन में कैसी दुविधाओं के होने पर कैसे प्रभावी निर्णय लें, सिखाना।

(3) सामाजीकरण द्वारा – विभिन्न प्रोग्रामों जैसे भारत दर्शन आदि द्वारा सामाजिक जुड़ाव विकसित करके कल्याणकारी निर्णयन क्षमता विकसित करना।

(4) पूर्व व्याख्यानों द्वारा – सफल अधिकारियों की case study देखकर।

(5) दंडात्मक कार्यवाही द्वारा – CCS 1964 द्वारा नैतिक निर्णय अपनाने पर जोर देकर।

अच्छा निर्णय वर्तमान में नीतियों के प्रभावी निष्पादन, भ्रष्टाचार नियंत्रण व समावेशी राज्य हेतु अति आवश्यक है। अतः उसे [नियमों + कानूनों + नैतिकता] द्वारा व्यक्ति में समावेशित करना चाहिए।

The Core IAS
India's First Institute dedicated to Answer writing
8800141518

SECTION B (CASE STUDY)

Q10. In the wake of climate change and severe air pollution in India, there is huge public awareness and demand to stop felling of trees for industry requirements. laws in India are also very strict against felling of trees; therefore, India has been importing huge quantities of cheap wood/timber from south-east Asian countries like Indonesia. India's demand of timber has resulted into large scale destruction of tropical forest and associated biodiversity in these countries, along with the displacement of many local. (a) Bring out the ethical dilemmas in this case (b) Do you think the same environmental ethics followed in home country should guide our international dealings or international relations should be based on pure economic terms? (20 Marks, 250 Words)

भारत में जलवायु परिवर्तन और गंभीर वायु प्रदूषण के मद्देनजर, भारी जन जागरूकता और उद्योग की आवश्यकताओं के लिए पेड़ों की कटाई को रोकने की मांग है। भारत में भी कानून पेड़ों की कटाई के खिलाफ बहुत सख्त हैं; इसलिए, भारत इंडोनेशिया जैसे दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों से भारी मात्रा में सस्ती लकड़ी/लकड़ी का आयात करता रहा है। भारत की लकड़ी की मांग के परिणामस्वरूप इन देशों में उष्णकटिबंधीय वन और संबंधित जैव विविधता का बड़े पैमाने पर विनाश हुआ है, साथ ही कई स्थानीय लोगों का विस्थापन भी हुआ है। (a) इस मामले में नैतिक दुविधाओं को सामने लाएं (b) क्या आपको लगता है कि स्वदेश में पालन की जाने वाली पर्यावरणीय नैतिकता को हमारे अंतरराष्ट्रीय व्यवहार का मार्गदर्शन करना चाहिए या अंतरराष्ट्रीय संबंध शुद्ध आर्थिक शर्तों पर आधारित होना चाहिए? (20 अंक, 250 शब्द)

उपर्युक्त केस स्टडी कहीं न कहीं भारत की सत्यनिष्ठा पर प्रश्नचिन्ह लगाती है। जो अपने देश में लकड़ी काटना अनैतिक मान रहा है परंतु विदेश से लगातार आयात कर रहा है

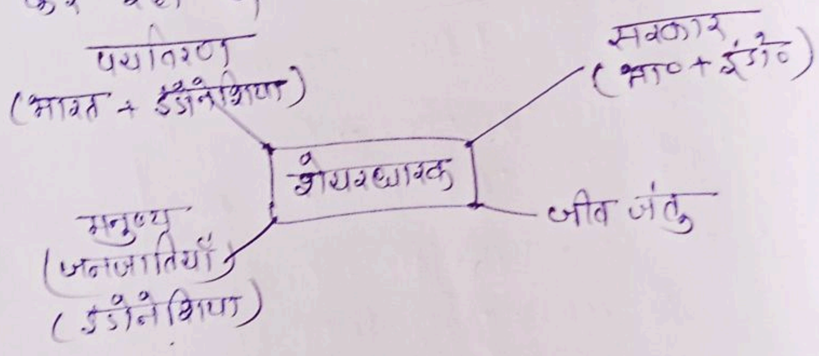

Demand

structure

Content

Enrichment

feedback

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए candidaates must not write on this margin

a) निहित नैतिक मुद्दे

(1) कथनी व करनी में सामंजस्य न होना – भारत में कटना बैन परंतु खरीदना नहीं।

(2) पर्यावरण क्षति – उष्णकटिबंधीय वनों का विनाश

(3) जीव जंतु के अधिकारों का मुद्दा – उनके पर्यावास नष्ट कर उनका विनाश करना।

(4) जनजातियों का मुद्दा – उन्हें अपना आवास छोड़ विस्थापन की समस्या।

(5) कानून का मुद्दा – यदि कोई चीज़ एक देश में बैन है तो दूसरे देश में क्या अंधाधुंध आयात सही है?

(6) सतत विकास का मुद्दा } दीर्घकाल में उत्पन्न होंगी।

(7) समावेशी विकास का मुद्दा

(8) पर्यावरणीय नैतिकता का मुद्दा – UNEP, UNFCCC द्वारा बनाये गये नैतिक नियम

b) गांधी जी की मान्यता है "खुशी तभी मिलती है जब हम जो सोचते हैं, कहते हैं व करते हैं में सामंजस्य हो।

उपर्युक्त केस स्टडी भारत को एक नैतिक द्वंद में डालती है कि वह अपनी सत्यनिष्ठा निभाये या आर्थिक हितों को

The Core IAS
India's First Institute dedicated to Answer Writing

देखे | ऐसे में मेरा दृष्टिकोण इस प्रकार
होगा — संबंधों को नियंत्रित
कि अंतर्राष्ट्रीय होकर भारत को
आर्थिक हितों से पोषित नैतिकता को
अपनी मान्यतायें पर्यावरणीय करनी चाहिए |
अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निर्देशित

कारण

- भारत का नैतिक द्वंद्व समाप्त होगा
- भारत एक देश है जो अपने नागरिकों के लिए आदर्श है अतः भारतीय नागरिकों में भी अच्छे वचनबद्धता, निर्णयन क्षमता आयेगी |
- इससे पर्यावरण क्षति को बचाया जा सकता है क्योंकि जब भारत की तरफ से मांग नहीं बढ़ेगी तो लकड़ियाँ नहीं कटेंगी |
- भारत नैतिकता का एक बड़ा आदर्श रखेगा | क्योंकि वह मानवाधिकारों की रक्षा भी करेगा |

लाभ

- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर छवि अच्छी होगी "नैतिकता रंग लाती है |"
- पर्यावरणीय नैतिकता के क्षेत्र में भारत नेतृत्वकर्ता बन सकता है

Mains Test 2022 उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए candidates must not write on this margin

हानि

- प्लेरेक्स लकड़ी आधारित उद्योगों को आर्थिक क्षति होगी।
- हो सकता है कि आर्थिक क्षति के कारण देश को नागरिकों का क्रोध सहना पड़े।

इस स्थिति में भारत को कुछ नवोन्मेषित व प्रगतिशील उपाय भी अपनाने चाहिए जो 'योगक्षेमं वहं' के आधार पर सर्वकल्याण करें व नैतिकता बनाम आर्थिक हितों में सामंजस्य करे।

उपाय

- वर्तमान में प्लास्टिक कचरा का उपयोग लकड़ी की पूर्ति हेतु लॉफ्ट प्लास्टिक वुड बनाकर किया जा रहा है। उदा० - महाराष्ट्र
- लकड़ी के स्थान पर जूट के कुर्सियाँ, तख्त बनाये जा सकते हैं। यह भारत को जूट इकॉनॉमी बनने में भी सहायता करेगा।